# RAJYA SABHA

*Wednesday, the 25th April, 1984/Vaisakha 5, 1906 (Saka)*

The House met at eleven of the clock, Mr. **Chairman** in the Chair.

## MEMBER SWORN

Shrimati Vijaya Raje Scindia (Madhya Pradesh)

---

## ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

### Outbreak of Viral Jaundice and Monkey Fever in Karnataka and Gujarat

*41 SHRI SHANKER SINH VAGHELA:†
SHRI MURHTIAR SINGH MALIK:

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether Government are aware that there has been an outbreak of viral Jaundice and monkey fever in an epidemic form in Karnataka and Gujarat;

(b) if so, what is the number of persons who died as a result thereof during the last one year;

(c) whether there is any danger of the epidimic spreading to other part of the country; and

(d) if so, what remedial action Government have taken to check the epidemic?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (MISS KUMUDBEN M. JOSHI): (a) to (d) A statement is laid on the table of the Sabha.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Shanker Sinh Vaghela.

Statement

Government are aware about the incidence of viral jaundice in Gujarat and that of Monkey fever in some districts of Karnataka. According to information received from the State of Gujarat, about 2449 cases of viral jaundice with 307 deaths were reported upto 22-4-1984. This has been investigated by the N.I.C.D. and All India Institute of Medical Sciences, New Delhi and necessary remedial/preventive measures have been recommended. Preventive measures have been intensified by the State Government. To control the incidence of viral jaundice, health education measures have been stopped up. The local bodies have been advised to safeguard the public water supply system against contamination and monitor quality of drinking water. No case of monkey fever has been reported from the State of Gujarat.

The incidence of Monkey Fever from Karnataka is being reported for quite long time in the Shimoga District. Recently cases of Monkey Fever have been reported from Dakshin Kannada and Uttar Kannada also. According to the information received, there were 645 cases of Monkey Fever with 120 deaths reported from these three districts upto 15th March, 1984. In the absence of any effective medicine, symptomatic treatment is being given to all such cases. To contain spread of the disease, anti-tick measures such as spraying of Lindane and use of repellants for prevention of tick-bites is being introduced. Tick repellants are available free of cost with PHCs/PHUs/ Village Panchayats. Health education has been intensified to make public aware of the preventive measures.

As the vaccine against the disease is the only long term preventive, the State Government is establishing a vaccine production laboratory at Shimoga under advice from the National Institute of Virology, Pune of the I.C.M.R. The vaccine is likely to be available in near future.

श्री शंकर सिंह वाघेला : चेयरमैन साहब यह जो मंत्री महोदय ने जवाब दिया है यह कोई एक दिन दो दिन एक महीने का सवाल नहीं है। पीलिया (जान्डिस) तथा मंकी फीवर तकरीबन एक साल से चला आ रहा है। स्टेटमेंट में जो कहा गया है कि 307 लोग गुजरात में पीलिया से मरे हैं इसके बारे में मैं कहना चाहता हूं कि 307 तो केवल अहमदाबाद में मरे हैं। इसलिए 'मोर दैन' 350 पीपुल्स आल ओवर इन गुजरात में मरे हैं (जान्डिस) से वहां इतने लोग मरे हैं कर्नाटक में मंकी फीवर से 150 से ज्यादा लोग मरे हैं। वैस्ट बंगाल में डिसेन्टरी डीसीज से 400 से ज्यादा लोग मरे हैं। मध्य प्रदेश में स्माल-पाक्स से मोर देन 200 लोग वहां भी मरे हैं। गवर्नमेंट की जो पालिसी है परिवार कल्याण की पता नहीं इससे कितने लोगों के परिवारों का कल्याण हो रहा है। मगर कई परिवारों का अकल्याण तो जरूर होता है। तो मैं मंत्री महोदया से जानना चाहता हूं कि स्टेट गवर्नमेंट ने अगर कोई कार्यवाही की होती तो एक साल तक जो इस चीज का डेवलपमेंट हुआ वह नहीं होता। लेकिन आपस में चीफ मिनिस्टर वर्सेज हेल्थ मिनिस्टर के झगड़े के कारण इसके हिसाब से उन्होंने कमी भी इस ओर ध्यान नहीं दिया स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन ने ध्यान नहीं दिया और परिणाम यह है कि आज भी लोग मर रहे हैं। हमारे अहमदाबाद का सिविल हास्पिटल एशिया में सबसे बड़ा हास्पिटल हैं। टू थाउजेन्ट्स बेड्स आर देयर इसको बन्द कर दिया है। इस कारण भी मरने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और वहां इसके लिए गवर्नमेंट के पास कोई दवाई नहीं है।

श्री सभापति : अब आप सवाल पूछिये।

श्री शंकर सिंह वाघेला : माई क्वेश्चन इज दिस कि उन्होंने डेल्टा स्ट्रेन और हेपाटाइटिस-बी इस हिसाब से जो लोग मरे हैं इनकी दवाईयों के लिये क्या स्टेट गवर्नमेंट ने आपसे कोई प्रार्थना की है? यून इटेड स्टेट्स और जर्मनी से ये दवायें आनी हैं इसके लिये क्या प्रबन्ध किया गया है?

कुमारी कुमुदबेन एम० जोशी : सभापति जी, आदरणीय सदस्य जी ने जो पहली बात कही है उसके साथ में बिलकुल सहमत नहीं हूं। इन्होंने कहा कि स्टेट गवर्नमेंट की ओर से यह जो अलग-अलग प्रकार के रोग हैं, इसके प्रति उदासीनता दिखाई है। मैं कहना चाहती हूं कि स्टेट गवर्नमेंट ने काफी इंटरेस्ट लिया है और नेशनल हेल्थ पालिसी की वजह से गवर्नमेंट आफ इंडिया ने जो इंट्रेस्ट लिया है, उससे आज हम देश में काफी तादाद में रोगों को काबू में ला पाये हैं। यह सवाल जो है वह जान्डिन्स का सवाल है और यह कोई एक दिन में, दो दिन में उपस्थित नहीं हुआ है।

हिन्दुस्तान की सोशियो-इकनामिक कन्डीशन को देखते हुए कहीं न कहीं यह रोग दिखाई पड़ता है। इसको रोकने के लिए गवर्नमेंट आफ इंडिया ने काफी क्लीयर इंस्ट्रक्शन्स दी हैं। यह चीज हेल्थ और हाईजीन के साथ जुड़ी हुई है। हाईजीन को ठीक करने के लिए इंडिविजुअल को यानी व्यक्ति को भी थोड़ा केयरफुल होना चाहिए। उसी तरह से सोसायटी और कम्युनिटी को भी होना पड़ता है। सिर्फ स्टेट गवर्नमेंट और गवर्नमेंट आफ इंडिया को ब्लेम करने से बात नहीं बनेगी। इसलिए हम इन बातों की तरफ भी ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। आपने जो बात ड्रग्ज के बारे में बताई है गुजरात गवर्न-

मेंट ने हमारे पास जो डिमान्ड्स की हैं उसके बारे में ड्रग्स कंट्रोलर ने इमीडिएटली एक्शन लिया है और इम्पोर्ट करने के लिए जो सुविधा चाहिए वह सुविधा भी दी है। दो सौ इंजेक्शन्स और वेक्सीन जो कर्मचारियों और डाक्टरों के लिए मांगी गई हैं उन ड्रग्ज की सुविधा भी गुजरात गवर्नमेंट को दे दी गई है।

**श्री शंकर सिंह वाघेला**: पानी के गंदा होने की वजह से भी लोग मारे जाते हैं। पानी की वाटर पाइप और गटर पाइप दोनों का पानी जब मिक्स हो जाता है और लोग उस पानी को पीते हैं तो उसकी वजह से भी बीमारी फैलती है और लोग मर जाते हैं। आपने अपने स्टेटमेंट में जो यह बात कही है कि वेक्सीन इज लाइकली टू बी एवेलेबल इन फ्यूचर तब तक तो पता नहीं कितने लोग मर जाएंगे। मैं प्रश्न यह पूछना चाहता हूं कि ठर्रा पीकर लोग मर जाते हैं तो आप उनको कुछ देते हैं। रोड और रेल एक्सीडेंट में लोग मर जाते हैं या दूसरे एक्सीडेंट में लोग मर जाते हैं तो आप उनको कुछ देते हैं। इसलिए क्या गवर्नमेंट इस बात को सोच रही है कि इस रोग से मरने वालों के परिवारों को भी कुछ सहायता दी जाएगी।

**कुमारी कुमुदबन एम० जोशी**: सिर्फ इसी रोग से मरने वालों को हम आइसोलेट नहीं कर सकते हैं। ऐसा एश्योरेंस मैं नहीं दे सकती हूं। बात यह है कि माननीय सदस्य ने पानी के बारे में जो बात कही है उसके बारे में मैं यह कहना चाहती हूं कि यहां से एक टीम गई थी जूनागढ़, अहमदाबाद, बड़ौदा आदि और उन्होंने वहां पर जो सर्वे किया तो पता लगा कि म्युनिसिपल कारपोरेशन जो पानी सप्लाई करती है उसमें मेन पाइप में लीकेज नहीं हैं। मेन पाइप से पानी लोग घरों में भी लेते हैं। वहां भी गन्दगी हो सकती है। इसलिए मैंने कहा कि इंडिविजुअल को भी इस बारे में केयरफुल होना पड़ता है। इसमें सबके कोआपरेशन की जरूरत है अकेली गवर्नमेन्ट इसमें कुछ नहीं कर पाएगी।

DR. SHANTI G. PATEL: Just now as explained by the Minister, this disease, that is, viral jaundice has been prevailing in this country for a long time. Sir, there was one time when we used to call it an epidemic but now it has become endemic and has covered the length and breadth of the country and it is taking a heavy toll. Unfortunately, neither we are maintaining any statistics regarding the deaths of those who have become victims of this particular disease nor have we taken the right remedial measures so far. Sir, this disease has been spreading to more and more places and it has been established that there can only be preventive measure. I would like to submit, Sir, one thing before I put a question that there is no specific treatment for this disease.] Let us realise this particular fact and that is why all the emphasis has to be on preventive aspect. He has very rightly pointed out that in the mixture particularly faeces matter is getting mixed with the water which is being taken by people in various places, particularly in cities, may be in Delhi also as just now explained by the Minister. It is a well-known fact that even in the city of Bombay the water mains have no pressure or rather a very little, minus pressure, while the drains which are surcharged have plus positive pressure. That is how the seepage takes place and the water mains also get affected.

Sir, I would, thereore, like to know as to what measures are sought to be taken in a planned way so that this contamination does not take place? That is the first question. The second question is blood transfusion which is also causing contamination. There are a number of persons who are donating their blood. Even the roadside travellers or labourers are picked up and a large number of them have been suffering from jaundice. No test, to the best of my knowledge, except

in a very few institutions, is being taken to find out whether the blood contains any organism which is likely to lead to this infection. So what steps are sought to be taken so that before blood is taken, a test is done to establish that the blood is jaundice germ-free. And thirdly, it has been said that now we are going to import vacciness for vaccination. Is it not possible for us to manufacture the vaccines at the Haffkine's Institute or at any other institute when this disease has admittedly been prevalent so much all over the country? so there are three questions. One is about measures to prevent this contamination in a planned way. Secondly, what steps are proposed to be taken so that the blood which is given for transfusion is germ-free? And the third question is regarding the manufacture of vaccines in this country.

MISS KUMUDBHEN M. JOSHI: Sir, I would like to bring to the notice of the hon. Member that the Government of India is also quite concerned about this problem and so we have appointed a committee under the chairmanship of the Director-General, Health Services, to go into the details of the various aspects and find out a remedy for it. As I have already brought to the notice of the House, eating habits and some of the other problems also cause jaundice. The committee met twice and they have given some suggestions and they have specified nine centres to go into the details and to find out ways and means as to how best we can control this disease.

About the second point regarding blood, I would like to bring to the notice of the hon. Member that whenever blood is taken from donors, it is tested for jaundice also. So that test also we are doing. Thirdly he said about vaccines. It is a good suggestion and the Government is seriously thinking about it because these vaccines which we are bringing from outside the country are very costly also. So it is a good suggestion for action, Sir.

MR. CHAIRMAN: Mr. Gopalsamy. Mr. Gopalsamy, you are not attentive. You raised your hand and then you are not attentive.

SHRI V. GOPALSAMY: Mr. Chairman, Sir, another epidemic, that is, encephalitis, which is more dangerous than viral jaudice and monkey fever, is devouring the precious lives of children, particularly in Tamil Nadu. Six years back it started in Tamil Nadu and it has spread throughout the country now. Even last month many children lost their lives due to this encephalitis. So far no proper medicines have been...

MR. CHAIRMAN: Don't drag in every disease.

SHRI V. GOPALSAMY: Because it is a very dangerous disease, particularly for the children. That is why I would like to know what steps have been proposed by the Government to tackle it. I hope the Minister will give a reply.

SHRI R. MOHANARANGAM: It has to be dragged. 'It is monkey disease. We have to drag so many things.

SHRI V. GOPALSAMY: Because it particularly affects children, I put this question.

MR. CHAIRMAN: You can ask your own question about any number of diseases, cholera, malaria, everything.

SHRI V. GOPALSAMY: I am concerned about children. Sir, you are more concerned about children.

MR. CHAIRMAN: I think we will confine ourselves to these two disease, jaudice and monkey fever. No other question.

SHRI V. GOPALSAMY: Sir, the Minister is prepared to give a reply.

MR. CHAIRMAN: Mr. Aiyubbaig.

श्री ईर्शादबेग ऐयुबबेग मिर्जा : मान्यवर, मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहूंगा कि क्योंकि गुजरात में इतनी भयंकर स्थिति का निर्माण हुआ है कि एशिया का सबसे बड़ा सिविल होस्पीटल जिसे कहा जाता है उसके फ्यू-मिगेशन की सभी चीजों को वहां पर

बंद कर दिया गया है। सभी पेशेन्ट वहां से हटा लिये गये हैं। मान्यवर, मंत्री महोदया ने जो जवाब यहां पर दिया है इससे सब चीजें साफतौर से सामने नहीं आती हैं। मैं मंत्री महोदया से यह पूछना चाहता हूं कि यह वातावरण पैदा होने के पश्चात् गुजरात की सरकार ने आपसे क्या डिमांड की है और इस पर क्या उपचार लिये गये हैं? जैसे जांडिस एक बार होने के बाद सिर्फ चार दिन के अंदर कई डाक्टरों की मृत्यु हो चुकी है, कई नर्सेस वहां मर गई हैं, कई वार्ड बंद्राय मर चुके हैं। चार दिन के अंदर फैसला हो जाता है इस वजह से जानना चाहता हूं कि आपने जो वेक्सीन बाहर से मंगाई हैं वे वेक्सीन कितने दिनों के अंदर आ जायेंगी, और जितने इन्फेक्टेड लोग हैं उनको कब तक पहुंच जायेगी, बिल्कुल साफतौर से इसकी जानकारी चाहता हूं? क्योंकि इतना भंयकर व्यापक स्वरूप इसका हो चुका कि लोग अहमदाबाद छोड़ कर जनागढ़ छोड़ कर दूसरे गांव में बसने के लिये जा रहे हैं।

ऐसी भंयकर परिस्थिति में गुजरात सरकार ने आप से क्या डिमांड किया है वह मैं जानना चाहता हूं और आपने इसके सम्बन्ध में क्या एक्शन लिया है और गुजरात गवर्नमेन्ट ने क्या किया है?

**कुमारी कुमुदबेन एम० जोशी :** एक बात तो यह है कि इतना पेनिक फैलाने की कोई जरुरत नहीं है कि सारे लोग सिटी छोड़-छोड़ कर जा रहे हैं।

**श्री सभापति :** यह तो रोज ही हो रहा है।

**कुमारी कुमुदबेन एम० जोशी :** रोज हो रहा है, मैं यह नहीं कहना चाहती। मैं इससे सहमत नहीं हूं परन्तु बात यह है कि कुछ केसेज नोटिस में आए हैं सिटीज में सारे लोग इसकी वजह से भाग रहे हैं यह बात ठीक नहीं है। दूसरी बात यह है कि गुजरात गवर्नमेंट के डायरेक्टर यहां आए थे।

**श्री सभापति :** उन्होंने आप से क्या मांगा?

**कुमारी कुमुदबेन एम० जोशी :** उन्होंने जो ड्रग इम्पोर्ट करनी थी उसको इम्पोर्ट करने के लिए ड्रग कंट्रोलर ने परमिशन देनी थी वह तुरन्त परमिशन दे दी गई है। अब आर्डर तो स्टेट गवर्नमेंट ने प्लेस करना है यह उनको पता होगा कि फारेन से दवा कितने दिन में आ रही है। हमने तो परमिशन देनी थी वह हमने इमीडियेटली दे दी है और गुजरात गवर्नमेंट ने जो एक्शन लेना था अस्पताल के बारे में वह ले लिया है। मुझे लगता है कि काफी तादाद में काम हो रहा है।

**श्री सभापति :** कुछ अन्दाज़ है कब तक आएगी?

**कुमारी कुमुदबेन एम० जोशी :** आर्डर तो उन्होंने रखा है। हमने तो केवल परमिशन ही देनी थी वह दे दी है।

Gujarat Government has placed the order with the company and it is coming soon.

SHRI SHANKARRAO NARAYANRAO DESHMUKH: Is the Government in possession of some information regarding municipal corporations or councils in Karnataka who were vigilant, who had taken care, that the water is not polluted or contaminated? And, if they have not taken proper care, what steps are required or what steps are taken by the Government?

MISS KUMUDBHEN M. JOSHI: Corporations are responsible to provide water to the citizens and I think that they are taking proper care. But we

would draw attention, through the State Government concerned, of the agencies who are responsible for providing water, to take more care and to be more vigilant.

**Modernisation of sone canal**

*42. SHRI SURAJ PRASAD:†
SHRI INDRADEEP SINHA:

Will the Minister of IRRIGATION be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Central Government have asked the Bihar Government to give its views on the report on modernisation of the Sone Canal as submitted by the World Bank;

(b) whether the Bihar Government has since submitted its view;

(c) whether it is a fact that the modernisation programme is likely to be undertaken during the Seventh Plan period; and

(d) if so, what is the estimated expenditure of the scheme?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF IRRIGATION (SHRI RAM NIWAS MIRDHA): (a) to (d) According to the project submitted by the State of Bihar in August, 1983 to the Centre, the modernisation scheme is estimated to cost Rs. 753 crores. World Bank has not prepared and submitted any project report on Modernisation of Sone Canal System in Bihar.

The Seventh Five-Year Plan of the State is still under formulation as such it will not be possible to indicate the provision for their scheme in the Seventh Five Year Plan.

---

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Suraj Prasad.

**श्री सूरज प्रसाद :** सभापति महोदय, यह जो सोन नहर है यह 100 वर्ष पुरानी हो चुकी है। यह नहर अपनी उपयोगिता भी समाप्त कर चुकी है। इसके टेल एंड में पानी ही नहीं पहुंच रहा है लेकिन फिर भी किसानों से पानी का रेट वसूल किया जाता है। इसलिए मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि इस नहर के आधुनिकीकरण की दिशा में सरकार ने यह कहा कि अभी तक सातवीं पंचवर्षीय योजना में इसको लेने के बारे में सरकार कोई विचार नहीं कर रही है। इसके पहले जो सिंचाई मन्त्री थे उन्होंने कहा था कि छठी पंचवर्षीय योजना में कुछ काम किया जाएगा। मैं सरकार से यह जानना चाहूंगा कि क्या छठी पंचवर्षीय योजना में इस नहर के आधुनिकीकरण करने की दिशा में कुछ राशि इसके लिए मुहैया की गई थी ? क्या वह राशि खर्च की गई है या नहीं यह मेरा पहला सवाल है। दूसरा सवाल मेरा यह है कि . . .

**श्री सभापति :** पहले यह तो मालूम हो कि नहर का क्या हो रहा है। इसको बना रहे हैं या नहीं बना रहे हैं।

**श्री राम निवास मिर्धा :** यह सही है कि सोन नहर बहुत पुरानी सिंचाई की व्यवस्था है। 100 वर्ष से ज्यादा पुरानी है और समय-समय पर इसमें सुधार किया जाता रहा है। 1965-67 और 1968 में इसका एक विचार बना था और इंटरनेशनल डवलपमेंट एसोसियेशन की मदद से काम किया गया था जिससे इस नहर की कार्यक्षमता बढ़ी और अब जो योजना आई है जैसे मैंने संकेत किया वह एक बहुत बड़ी योजना है जिसमें करीब 753 करोड़ रूपये खर्च होंगे और कुछ फेसेज में ही हम काम करेंगे।